रांगेय राघव

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» रांगेय राघव: जीवन परिचय और साहित्यिक यात्रा

प्रश्न 1 (आसान). रांगेय राघव का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तर – आगरा में

प्रश्न 2 (आसान). रांगेय राघव ने किस नाम से साहित्य-रचना की?
उत्तर – रांगेय राघव नाम से

प्रश्न 3 (मध्यम). रांगेय राघव ने किन-किन साहित्यिक विधाओं में रचना की है?
उत्तर – कहानी, उपन्यास, कविता, आलोचना

प्रश्न 4 (कठिन). रांगेय राघव की अल्पायु में मृत्यु होने के बावजूद उन्होंने साहित्य में क्या महत्वपूर्ण योगदान दिया?
उत्तर – उन्होंने कम उम्र में ही साहित्य की विविध विधाओं (कहानी, उपन्यास, कविता, आलोचना) में 80 से अधिक कहानियाँ और अनेक उपन्यास लिखे, जिनमें समाज के शोषित-पीड़ित मानव जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है।

» रांगेय राघव का कथा-साहित्य और मुख्य विशेषताएँ

प्रश्न 5 (आसान). रांगेय राघव के दो प्रमुख उपन्यासों के नाम बताइए।
उत्तर – घरौंदा और मुर्दों का टीला।

प्रश्न 6 (आसान). रांगेय राघव की कहानियों की भाषा शैली कैसी थी?
उत्तर – उनकी कहानियों की भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण थी।

प्रश्न 7 (मध्यम). रांगेय राघव के कथा-साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता क्या है, संक्षेप में बताइए।
उत्तर – उनके कथा-साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता 'शोषित-पीड़ित मानव जीवन का यथार्थ चित्रण' है। वह समाज के दबे-कुचले और अत्याचार सहने वाले लोगों की सच्ची कहानियाँ लिखते थे।

प्रश्न 8 (कठिन). पाठ्यक्रम में संकलित कहानी 'गूँगे' रांगेय राघव के कथा-साहित्य की किस विशेषता को दर्शाती है? समझाकर लिखिए।
उत्तर – 'गूँगे' कहानी रांगेय राघव के कथा-साहित्य की 'शोषित-पीड़ित मानव जीवन के यथार्थ चित्रण' की विशेषता को दर्शाती है। इस कहानी में एक गूँगे किशोर की असहायता और समाज की संवेदनहीनता को बहुत मार्मिक ढंग से दिखाया गया है, जो समाज के कमज़ोर और हाशिए पर पड़े लोगों की स्थिति का सच्चा प्रतिबिंब है।

» 'गूँगे' कहानी का परिचय: केंद्रीय विचार

प्रश्न 9 (आसान). 'गूँगे' कहानी के लेखक कौन हैं?
उत्तर – रांगेय राघव

प्रश्न 10 (आसान). कहानी का मुख्य पात्र कौन है?
उत्तर – एक गूँगा किशोर

प्रश्न 11 (मध्यम). 'गूँगे' कहानी किन दो मुख्य विचारों को उजागर करती है?
उत्तर – शोषित मानव की असहायता और दिव्यांगों के प्रति समाज की संवेदनहीनता।

प्रश्न 12 (कठिन). लेखक ने दिव्यांगों के प्रति समाज की संवेदनहीनता को 'गूँगे' कहानी में कैसे दर्शाया है?
उत्तर – कहानी में गूँगा किशोर समाज की उपेक्षा और कठोर व्यवहार का सामना करता है, जिससे यह दिखाया गया है कि लोग उनकी ज़रूरतों और भावनाओं को नहीं समझते।

» दिव्यांगों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण

प्रश्न 13 (आसान). लेखक के अनुसार, हमें दिव्यांगों को कैसे मानना चाहिए?
उत्तर – लेखक के अनुसार, हमें दिव्यांगों को 'सामान्य मनुष्य की तरह' मानना चाहिए।

प्रश्न 14 (आसान). संवेदनशील व्यवहार का क्या अर्थ है?
उत्तर – संवेदनशील व्यवहार का अर्थ है उनकी भावनाओं को समझना और उनकी मदद करना, न कि उनका मज़ाक उड़ाना।

प्रश्न 15 (मध्यम). 'अलग-थलग न पड़ने दें' का क्या मतलब है, 'गूँगे' कहानी के संदर्भ में समझाइए?
उत्तर – 'अलग-थलग न पड़ने दें' का मतलब है कि उन्हें अकेलापन महसूस न हो और वे भी समाज का हिस्सा बनें। 'गूँगे' कहानी में, जब लोग उस पर हँसते हैं या उसे काम नहीं देना चाहते, तो वह खुद को अलग महसूस करता है।

प्रश्न 16 (कठिन). कहानी में चमेली का गूँगे के प्रति दृष्टिकोण कैसे बदलता है, और यह 'सामाजिक दृष्टिकोण' के किस पहलू को दर्शाता है?
उत्तर – शुरुआत में चमेली को 'गूँगे' पर दया आती है और वह उसे नौकर रखना चाहती है। लेकिन जब वह भाग जाता है या बच्चे उसे मारते हैं, तो वह क्रोधित होती है और उसे 'नाली का कीड़ा' कहती है। यह दर्शाता है कि एक व्यक्ति का दृष्टिकोण समय के साथ बदल सकता है, और समाज अक्सर दिव्यांगों को पूरी तरह स्वीकार करने में हिचकिचाता है, कभी दया तो कभी उपेक्षा दिखाता है। बाद में उसे फिर ममता महसूस होती है, जब वह देखती है कि गूँगे में शक्ति होते हुए भी उसने बसंता पर हाथ नहीं उठाया। यह 'संवेदनशीलता' की ओर लौटने का एक क्षण है।

» कहानी का प्रतीकात्मक अर्थ: संवेदनहीन समाज

प्रश्न 17 (आसान). प्रतीकात्मक अर्थ क्या होता है?
उत्तर – प्रतीकात्मक अर्थ मतलब जब कोई शब्द या चीज़ अपने शाब्दिक अर्थ से हटकर किसी गहरे या छिपे हुए विचार या भाव को दर्शाए।

प्रश्न 18 (आसान). कहानी में 'गूँगे' बच्चे को देखकर समाज का रवैया कैसा था?
उत्तर – समाज पहले तो उसे देखकर उत्सुक होता है, जैसे 'तोते को राम-राम कहते सुनकर', लेकिन असल में वे उसके प्रति गहरे स्तर पर संवेदनहीन होते हैं, उसे समझते नहीं।

प्रश्न 19 (मध्यम). कहानी के अनुसार, संवेदनहीन समाज की क्या पहचान है?
उत्तर – संवेदनहीन समाज वह है जिसके लोग 'अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति सचेत नहीं' रहते और दूसरों के दुख-दर्द या ज़रूरतों को अनदेखा करते हैं।

प्रश्न 20 (कठिन). रांगेय राघव जी 'गूँगे' कहानी के माध्यम से किस बड़े सामाजिक मुद्दे पर प्रकाश डालना चाहते हैं?
उत्तर – लेखक 'गूँगे' कहानी के माध्यम से समाज की व्यापक संवेदनहीनता पर प्रकाश डालना चाहते हैं, जहाँ लोग केवल अपनी दुनिया में खोए रहते हैं और दूसरों के प्रति अपने मानवीय व सामाजिक दायित्वों को भूल जाते हैं। यह कहानी इस बात का प्रतीक है कि ऐसे लोग होते हुए भी 'गूँगे-बहरे' हैं।

» गूँगे का प्रारंभिक जीवन और संघर्ष

प्रश्न 21 (आसान). गूँगे को बचपन में कौन छोड़कर चला गया था?
उत्तर – उसकी माँ

प्रश्न 22 (आसान). गूँगे के पिता के साथ क्या हुआ था?
उत्तर – उनकी मृत्यु हो गई थी।

प्रश्न 23 (मध्यम). गूँगे के पालन-पोषण में क्या कठिनाइयाँ आई थीं?
उत्तर – उसे पालने वाले लोगों ने उसे बहुत मारा-पीटा और उसकी अनदेखी की।

प्रश्न 24 (कठिन). लेखक ने गूँगे की माँ को 'जो घूँघट काढ़ती थी' क्यों कहा होगा, और इसका क्या महत्व है?
उत्तर – लेखक ने यह कहकर शायद उस समय की ग्रामीण या पारंपरिक समाज की ओर इशारा किया है जहाँ महिलाएँ घूँघट करती थीं। माँ के चले जाने से बच्चे का पारंपरिक सहारा भी छिन गया, जो उसके संघर्ष को और बढ़ाता है।

» गूँगे की संवादहीनता की यातना और स्वाभिमान

प्रश्न 25 (आसान). गूँगा अपनी बात कहने की कोशिश कैसे करता था?
उत्तर – वह 'जबरदस्त कोशिश' करता था लेकिन सिर्फ 'कर्कश काँय-काँय' की आवाज़ें ही निकलती थीं।

प्रश्न 26 (आसान). गूँगे का 'स्वाभिमान' किस बात से पता चलता है?
उत्तर – वह कहता है कि 'हाथ फैलाकर कभी नहीं माँगा' और 'मेहनत का खाता हूँ'।

प्रश्न 27 (मध्यम). संवादहीनता गूँगे के लिए 'यातना' क्यों थी? कहानी के आधार पर समझाइए।
उत्तर – क्योंकि वह अपने 'हृदय को उगल देना चाहता' था पर 'उगल नहीं पाता' था, उसकी आवाज़ें 'अस्फुट' और 'कर्कश' थीं जिन्हें कोई समझ नहीं पाता था, जिससे वह अपनी भावनाएं व्यक्त करने में असमर्थ था।

प्रश्न 28 (कठिन). गूँगे की संवादहीनता और स्वाभिमान, ये दोनों गुण उसके चरित्र को कैसे प्रभावित करते हैं? विस्तार से बताइए।
उत्तर – संवादहीनता उसे 'भीषण आंतरिक पीड़ा' देती है, जिससे वह अकेला और कटा हुआ महसूस करता है, लेकिन उसका 'स्वाभिमान' उसे इन मुश्किलों के बावजूद 'आत्मनिर्भर' और 'मज़बूत' बनाता है। यह उसे 'दया का पात्र' बनने से बचाता है और अपनी मेहनत पर भरोसा करना सिखाता है, जिससे उसका चरित्र और भी 'प्रभावशाली' हो जाता है।

» चमेली और गूँगे का संबंध: करुणा और व्यवहार

प्रश्न 29 (आसान). चमेली ने पहली बार गूँगे को अपने यहाँ रखने का फैसला क्यों किया?
उत्तर – उसे गूँगे पर दया आई क्योंकि वह बेसहारा और ज़रूरतमंद था।

प्रश्न 30 (आसान). चमेली ने गूँगे को शुरुआत में क्या देने का वादा किया था?
उत्तर – उसे 'खाना' और 'कुछ पैसे' (चार रुपये) देने का वादा किया था।

प्रश्न 31 (मध्यम). चमेली के मन में गूँगे के प्रति कठोरता क्यों आने लगी?
उत्तर – गूँगे के 'भाग जाने' और 'चोरी' जैसे व्यवहार के कारण चमेली की दया 'निराशा और कठोरता' में बदल गई।

प्रश्न 32 (कठिन). चमेली का यह कहना – 'नाली का कीड़ा! 'एक छत उठाकर सिर पर रख दी' फिर भी मन नहीं भरा' – उसके किन मनोभावों को दर्शाता है?
उत्तर – यह कथन चमेली की अत्यधिक निराशा, गुस्सा और उस भावना को दर्शाता है कि उसने गूँगे पर इतना उपकार किया, पर उसने उस उपकार को नहीं समझा और गलत व्यवहार करता रहा।

» सामाजिक उपेक्षा और गूँगे की वापसी

प्रश्न 33 (आसान). गूँगा वापस क्यों आया?
उत्तर – भूख और बेसहारा होने के कारण।

प्रश्न 34 (आसान). चमेली को गूँगे के भागने पर कैसा लगा?
उत्तर – उसे गुस्सा और निराशा हुई।

प्रश्न 35 (मध्यम). गूँगे की वापसी से समाज की किस सच्चाई का पता चलता है?
उत्तर – इससे यह पता चलता है कि समाज में असहाय और कमजोर लोगों को उपेक्षा मिलती है और उन्हें कोई सहारा नहीं मिलता।

प्रश्न 36 (कठिन). अगर गूँगा वापस नहीं लौटता तो उसके साथ क्या हो सकता था? कहानी के संदर्भ में उत्तर दो।
उत्तर – अगर गूँगा वापस नहीं लौटता तो वह सड़क पर 'कुत्तों की तरह जूठन पर जिंदगी बिताए, दर-दर अपमानित और लांछित' होता। समाज में उसे कोई स्थान नहीं मिलता और वह शायद भूख या मारपीट का शिकार हो जाता।

» गूँगे का स्वाभिमान और चमेली का क्रोध

प्रश्न 37 (आसान). चमेली ने गूँगे को रोटियाँ किस भाव से दीं?
उत्तर – क्रोध और अपमान के भाव से।

प्रश्न 38 (आसान). गूँगे ने रोटियाँ तुरंत क्यों नहीं उठाईं?
उत्तर – अपने स्वाभिमान के कारण।

प्रश्न 39 (मध्यम). चमेली के क्रोध का मुख्य कारण क्या था?
उत्तर – गूँगे द्वारा 'चोरी करना' और 'भाग जाना' उसकी आदतों से चमेली बहुत क्रोधित हुई।

प्रश्न 40 (कठिन). क्या चमेली का गूँगे को घर से निकालना सही था? अपने विचार दीजिए।
उत्तर – यह व्यक्तिपरक प्रश्न है। बच्चे इस पर चर्चा कर सकते हैं कि चमेली की ओर से उसका क्रोध और निराशा एक हद तक स्वाभाविक थी, लेकिन गूँगे की मजबूरी को समझे बिना उसे निकालना संवेदनहीनता थी। उसके पास और कोई विकल्प नहीं था।

» गूँगे का अंत और सामाजिक पीड़ा का विस्तार

प्रश्न 41 (आसान). कहानी के अंत में गूँगे पर किसने हमला किया?
उत्तर – सड़क के लड़कों ने।

प्रश्न 42 (आसान). चमेली के अनुसार, समाज में 'गूँगे' कौन लोग हैं?
उत्तर – जो अपनी बात कह नहीं पाते और न्याय के लिए लड़ नहीं पाते।

प्रश्न 43 (मध्यम). गूँगे की 'चीत्कार' को लेखक ने किस तरह से प्रस्तुत किया है? यह क्या दर्शाती है?
उत्तर – लेखक ने इसे गूँगे के अंदर के सारे दर्द, उसकी बेबसी और असहायता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है, जो उसकी शोषण भरी ज़िंदगी को दर्शाती है।

प्रश्न 44 (कठिन). कहानी का अंत 'सामाजिक पीड़ा के विस्तार' को कैसे रेखांकित करता है? चमेली का चिंतन इसमें क्या भूमिका निभाता है?
उत्तर – कहानी का अंत गूँगे की पिटाई और उसकी चीत्कार के माध्यम से समाज में व्याप्त अन्याय और संवेदनहीनता को दर्शाता है। चमेली का चिंतन इस व्यक्तिगत पीड़ा को 'समाज के अनेक गूँगे' से जोड़कर एक व्यापक सामाजिक समस्या के रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह पीड़ा किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि पूरे समाज में फैली हुई है, जो असहायों की आवाज़ को दबा देती है।

» कहानी का अंतिम संदेश: व्यापक 'गूँगेपन' का सवाल

प्रश्न 45 (आसान). कहानी में चमेली ने 'आज दिन ऐसा कौन है जो गूँगा नहीं है' यह बात कब सोची?
उत्तर – चमेली ने यह बात गूँगे पर हुए हमले और उसके दर्द को देखकर सोची।

प्रश्न 46 (आसान). 'गूँगा' शब्द का यहाँ केवल शारीरिक अक्षमता से क्या संबंध है या कुछ और?
उत्तर – यहाँ 'गूँगा' शब्द केवल शारीरिक अक्षमता से नहीं, बल्कि सामाजिक अन्याय के प्रति आवाज़ न उठा पाने की मानसिक स्थिति से संबंधित है।

प्रश्न 47 (मध्यम). लेखक ने 'कृत्रिम सुख की छलना' का उल्लेख क्यों किया है और यह कैसे 'गूँगेपन' को बढ़ावा देती है?
उत्तर – लेखक ने 'कृत्रिम सुख की छलना' का उल्लेख इसलिए किया है क्योंकि लोग अपने छोटे-छोटे स्वार्थों और आराम भरी झूठी खुशी में फँसकर समाज की बड़ी समस्याओं पर आवाज़ नहीं उठाते, जिससे उनका 'गूँगापन' बढ़ जाता है।

प्रश्न 48 (कठिन). आज के सामाजिक परिवेश में यह 'व्यापक गूँगापन' किन-किन रूपों में देखा जा सकता है? तीन उदाहरण दीजिए।
उत्तर – आज के सामाजिक परिवेश में यह 'व्यापक गूँगापन' निम्न रूपों में देखा जा सकता है: 1) ऑनलाइन उत्पीड़न (cyberbullying) या ट्रोलिंग देखकर भी चुप रहना, 2) भ्रष्टाचार या रिश्वतखोरी होते देखकर भी डर के मारे शिकायत न करना, 3) किसी समूह विशेष के साथ अन्याय होते देखकर भी मुखर न होना।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. रांगेय राघव का मूल नाम क्या था और उन्होंने किस आयु में साहित्य-सेवा में योगदान देना शुरू किया?

› सबसे पहले, हमें लेखक का मूल नाम पहचानना होगा। पाठ में स्पष्ट रूप से 'उनका मूल नाम तिरुमल्लै नंबाकम वीर राघव आचार्य था' लिखा है।

› दूसरा, हमें यह देखना होगा कि उन्होंने किस उम्र में लिखना शुरू किया। हालांकि सीधे उम्र नहीं दी है, पर यह बताया है कि 'उन्होंने 1936 से ही कहानियाँ लिखनी शुरू कर दी थीं' और उनका जन्म '1923' में हुआ था। तो 1936 - 1923 = 13 साल की उम्र में उन्होंने लिखना शुरू कर दिया था।

› तीसरा, उनकी मृत्यु की अल्पायु भी महत्वपूर्ण है जो उनके कम समय के योगदान को दर्शाती है।

उत्तर – रांगेय राघव का मूल नाम तिरुमल्लै नंबाकम वीर राघव आचार्य था। उन्होंने लगभग 13 वर्ष की आयु से ही साहित्य-सेवा में योगदान देना शुरू कर दिया था और मात्र 39 वर्ष की अल्पायु में ही उनका निधन हो गया।

उदाहरण 2. रांगेय राघव के किन्हीं दो प्रमुख कहानी संग्रहों के नाम बताइए और उनकी कथा-साहित्य की एक मुख्य विशेषता स्पष्ट कीजिए।

› पहला, रांगेय राघव के प्रमुख कहानी संग्रह याद करेंगे। जैसे 'जीवन के दाने' और 'समुद्र के फेन'।

› दूसरा, उनकी कथा-साहित्य की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं, यह सोचेंगे। सबसे अहम विशेषता 'शोषित-पीड़ित मानव जीवन का यथार्थ चित्रण' था।

› तीसरा, इस विशेषता को उदाहरण के साथ समझाएँगे। जैसे, उन्होंने समाज के दबे-कुचले लोगों की सच्ची और मार्मिक कहानियाँ लिखीं, जो उनकी समस्याओं और दर्द को दर्शाती थीं।

उत्तर – रांगेय राघव के दो प्रमुख कहानी संग्रह 'जीवन के दाने' और 'समुद्र के फेन' हैं। उनके कथा-साहित्य की एक मुख्य विशेषता 'शोषित-पीड़ित मानव जीवन का यथार्थ चित्रण' है। उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में समाज के ऐसे लोगों का सच्चा और संवेदनशील चित्रण किया जो आर्थिक या सामाजिक रूप से कमज़ोर थे और जिन पर अत्याचार होता था।

उदाहरण 3. 'गूँगे' कहानी का मुख्य संदेश क्या है?

› पहला संदेश है कि कहानी 'एक गूँगे किशोर के माध्यम से' शोषित और दबे-कुचले लोगों की 'असहायता' को दिखाती है।

› दूसरा, यह 'दिव्यांगों के प्रति समाज की संवेदनहीनता' पर प्रकाश डालती है कि कैसे हम उन पर ध्यान नहीं देते।

› तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह है कि हमें 'दिव्यांगों को सामान्य मनुष्य की तरह मानना' चाहिए और उनके साथ 'संवेदनशील व्यवहार' करना चाहिए।

उत्तर – कहानी का मुख्य संदेश शोषित मानव की लाचारी और दिव्यांगों के प्रति समाज की असंवेदनशीलता को उजागर करना है, साथ ही यह सीख देना है कि हमें सभी दिव्यांगों के साथ सम्मानजनक और मानवीय व्यवहार करना चाहिए।

उदाहरण 4. एक बच्चा जो बोल और सुन नहीं सकता, वह दुकान पर सामान लेने जाता है। लोग उसे देखकर हँसते हैं और ठीक से बात नहीं करते। इस स्थिति में 'सामाजिक दृष्टिकोण' के अनुसार क्या सही और क्या गलत है?

› सही दृष्टिकोण: लोगों को उस बच्चे पर हँसना नहीं चाहिए और न ही उसे अनदेखा करना चाहिए।

› लोगों को 'संवेदनशील व्यवहार' करते हुए उसके 'इशारों को समझने' की कोशिश करनी चाहिए।

› दुकानदार को भी उसे 'सामान्य मनुष्य की तरह' मानकर, धीरज से उससे बात करनी चाहिए और सामान देना चाहिए, उसे 'अलग-थलग' महसूस नहीं कराना चाहिए।

› गलत दृष्टिकोण: उस पर हँसना, उसे 'गूँगा' कहकर बुलाना, या उसे भिखारी समझकर भगा देना, ये सब गलत है।

उत्तर – सही दृष्टिकोण यह है कि हमें दिव्यांग व्यक्ति के प्रति सम्मान, संवेदनशीलता और समानता का भाव रखना चाहिए, न कि उसका उपहास या तिरस्कार करना।

उदाहरण 5. कहानी में 'गूँगे' शब्द का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

› पहचानें कि 'गूँगा' शब्द सिर्फ़ शारीरिक अक्षमता नहीं दर्शाता।

› विचार करें कि समाज में कौन से लोग समाज की 'आवाज़' नहीं सुनते या अपनी 'आवाज़' नहीं उठाते।

› जो लोग 'सामाजिक दायित्वों' के प्रति 'संवेदनहीन' या 'असचेत' होते हैं, वे ही प्रतीकात्मक रूप से 'गूँगे-बहरे' होते हैं।

› यह समझें कि लेखक ऐसे लोगों पर तीखी टिप्पणी कर रहा है जो समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी नहीं समझते।

उत्तर – 'गूँगे' शब्द का प्रतीकात्मक अर्थ उन लोगों से है जो समाज के प्रति संवेदनहीन होते हैं और अपने सामाजिक दायित्वों को नहीं समझते या उन्हें पूरा नहीं करते। वे दूसरों के दुख-दर्द को अनसुना कर देते हैं।

उदाहरण 6. गूँगे के प्रारंभिक जीवन में संघर्ष के मुख्य कारण क्या थे?

› पहला कारण था, उसके बचपन में ही माँ का उसे छोड़कर चले जाना।

› दूसरा कारण था, उसकी माँ के जाने से पहले ही पिता का देहांत हो जाना।

› तीसरा कारण था, जिन लोगों ने भी उसे पाला, उन्होंने प्यार और देखभाल की जगह उसे मारा-पीटा और उपेक्षित किया।

उत्तर – गूँगे के प्रारंभिक जीवन में संघर्ष के मुख्य कारण थे माँ द्वारा त्यागा जाना, पिता की मृत्यु, और पालन-पोषण करने वालों से मिली हिंसा तथा उपेक्षा।

उदाहरण 7. गूँगे की संवादहीनता उसकी यातना को कैसे बढ़ाती थी और उसका स्वाभिमान किस बात से प्रकट होता है?

› पहले हम संवादहीनता से उत्पन्न यातना को देखेंगे: कहानी में बताया गया है कि वह अपनी बात कहने की 'जबरदस्त कोशिश' करता है, लेकिन 'नतीजा कुछ नहीं, केवल कर्कश काँय-काँय का ढेर!' निकलता है। उसकी 'अस्फुट ध्वनियाँ' ऐसी थीं जैसे 'आदिम मानव भाषा बनाने में जी-जान से लड़ रहा हो'।

› अब हम उसकी यातना को गहराई से समझेंगे: चमेली यह अनुभव करती है कि 'यदि गले में काकल ठीक नहीं हो तो मनुष्य क्या से क्या हो जाता है।' गूँगा 'हृदय को उगल देना चाहता है, किंतु उगल नहीं पाता' - यह उसकी सबसे बड़ी यातना थी।

› अब स्वाभिमान को देखेंगे: जब उससे खाने के बारे में पूछा जाता है तो वह 'हाथ फैलाकर कभी नहीं माँगा, भीख नहीं लेता' का इशारा करता है।

› स्वाभिमान का दूसरा पहलू: वह भुजाओं पर हाथ रखकर बताता है कि वह 'मेहनत का खाता हूँ' और पेट बजाकर यह भी इशारा करता है कि वह यह सब 'इस पेट के लिए' करता है। इससे स्पष्ट होता है कि वह आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी है।

उत्तर – गूँगे की संवादहीनता से उसकी यातना बढ़ती थी क्योंकि वह अपनी 'हृदय की बात' 'कर्कश काँय-काँय' और 'अस्फुट ध्वनियों' के कारण व्यक्त नहीं कर पाता था, जिससे उसे अंदरूनी पीड़ा होती थी। उसका स्वाभिमान इस बात से प्रकट होता है कि वह 'कभी भीख नहीं माँगता' और 'मेहनत का खाता' है, अपनी आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहता।

उदाहरण 8. चमेली ने गूँगे को अपने यहाँ क्यों रखा? और समय के साथ उसके मन में गूँगे के प्रति क्या बदलाव आया?

› शुरुआत में, चमेली को गूँगे पर दया आती है क्योंकि वह बेसहारा और भूखा था। वह सोचती है, 'मुझे तो दया आती है बेचारे पर' और उसे अपने घर में काम पर रख लेती है।

› वह गूँगे को 'कुछ पैसे' और खाना देकर सहारा देती है, यह उसकी 'करुणा' का भाव दर्शाता है।

› समय बीतने पर, गूँगा काम से भाग जाता है और कभी-कभी चोरी भी करता है। इस व्यवहार से चमेली 'निराश' होती है।

› उसकी दया और करुणा 'कठोरता' में बदल जाती है, और वह गूँगे को 'नाली का कीड़ा' या 'मक्कार' कहकर डांटती भी है।

› अंत में, वह उसे घर से निकाल भी देती है, जो उसके मन में आई 'घृणा' और गुस्से को दिखाता है।

उत्तर – चमेली ने गूँगे को शुरुआती करुणा के कारण अपने यहाँ रखा, परंतु उसके व्यवहार के कारण चमेली के मन में निराशा, गुस्सा और कठोरता आ गई।

उदाहरण 9. गूँगा चमेली के घर से क्यों भागा था और वापस क्यों लौटा?

› पहला कदम: गूँगा चमेली के घर से इसलिए भागा क्योंकि उसे अपनी स्वाभिमानी प्रकृति के कारण चमेली की दया और कठोरता दोनों ही पसंद नहीं थी। वह अपनी मर्जी से काम करना चाहता था और शायद चमेली की 'निराशा और कठोरता' से भी दुखी था।

› दूसरा कदम: वह वापस इसलिए लौटा क्योंकि उसे समाज में कोई सहारा नहीं मिला। बाहर की दुनिया में 'सामाजिक उपेक्षा' के कारण वह अकेला पड़ गया, उसे कोई काम या खाना नहीं मिला।

› तीसरा कदम: भूख ने उसे 'मजबूर' कर दिया। वह भूखा था और उसे पता था कि चमेली के घर ही उसे खाना मिलेगा, चाहे उसके साथ कैसा भी व्यवहार हो।

उत्तर – गूँगा अपनी स्वाभिमानी प्रकृति और चमेली के बदलते व्यवहार के कारण भागा था, लेकिन समाज में मिली उपेक्षा और भूख से मजबूर होकर उसे चमेली के घर वापस लौटना पड़ा।

उदाहरण 10. पाठ के किस प्रसंग से 'गूँगे का स्वाभिमान' स्पष्ट होता है?

› पहले हम देखेंगे कि गूँगे को रोटियाँ कैसे दी गईं। पाठ में है कि चमेली ने 'पेंफक दी उसकी ओर रोटियाँ। रोष से पीठ मोड़कर खड़ी हो गई।' यहाँ चमेली ने रोटियाँ सम्मान से नहीं, बल्कि गुस्से में फेंकी थीं।

› फिर हम देखेंगे कि गूँगे ने उन रोटियों के साथ क्या किया। 'वफतु गूँगा खड़ा रहा। रोटियाँ छुईं तक नहीं।' इसका मतलब है कि उसने तुरंत उन रोटियों को नहीं उठाया।

› अब इस व्यवहार का मतलब समझेंगे। तुरंत रोटियाँ न उठाने का मतलब है कि उसे चमेली के अपमानजनक तरीके से खाना देने पर बुरा लगा। वह तुरंत स्वीकार करके अपना 'स्वाभिमान' खोना नहीं चाहता था।

› अंत में, थोड़ी देर बाद उसने रोटियां उठाईं, जो उसकी मजबूरी दिखाती है, लेकिन तुरंत न उठाना ही उसका स्वाभिमान दर्शाता है।

उत्तर – गूँगे को जब चमेली ने क्रोध में 'भिखारी' कहकर रोटियाँ फेंकीं, तब उसने 'खड़ा रहा। रोटियाँ छुईं तक नहीं' - इस प्रसंग से उसका स्वाभिमान स्पष्ट होता है। वह अपमानित महसूस कर रहा था और तुरंत उन रोटियों को स्वीकार नहीं करना चाहता था।

उदाहरण 11. गूँगे के अंतिम दृश्य में उसकी 'चीत्कार' का क्या महत्व है और यह सामाजिक पीड़ा को कैसे दर्शाता है?

› पहले सोचो, गूँगा कौन था? एक असहाय, बोल और सुन न सकने वाला किशोर।

› अब देखो, सड़क के लड़कों द्वारा उसे पीटा जाना उसकी असहायता को और बढ़ाता है।

› उसकी 'चीत्कार' केवल एक आवाज़ नहीं थी, बल्कि उसके मन के गहरे दर्द, उसकी बेबसी और उस शोषण का प्रतीक थी जो उसने जीवन भर सहा था।

› चमेली के चिंतन से यह बात और स्पष्ट होती है कि ऐसे 'गूँगे' सिर्फ शारीरिक रूप से ही नहीं, बल्कि सामाजिक रूप से भी हमारे समाज में हैं जो अपनी पीड़ा व्यक्त नहीं कर पाते या जिनकी कोई सुनता नहीं।

› तो, 'चीत्कार' उन सभी असहाय लोगों की आवाज़ बन जाती है जिनकी कोई नहीं सुनता, और यही सामाजिक पीड़ा का विस्तार है।

उत्तर – गूँगे की 'चीत्कार' उसकी शारीरिक अक्षमता से उपजी बेबसी, समाज की संवेदनहीनता और असहाय लोगों की

अनसुनी पीड़ा का प्रतीक है, जो यह दर्शाता है कि समाज में कई ऐसे 'गूँगे' हैं जो न्याय के अभाव में अपनी बात नहीं कह पाते।

उदाहरण 12. कहानी में चमेली 'आज दिन ऐसा कौन है जो गूँगा नहीं है' कहकर क्या प्रश्न उठाती है? इसका क्या अर्थ है?

› सबसे पहले, समझो कि चमेली यह बात क्यों कहती है - गूँगे पर हुए अन्याय को देखकर उसका मन विचलित होता है।

› दूसरा, सोचो कि 'गूँगा नहीं है' का मतलब क्या सिर्फ शारीरिक गूँगापन है? नहीं, ये उससे कहीं ज़्यादा गहरा है।

› तीसरा, लेखक के शब्दों को याद करो कि कैसे 'हृदय समाज, राष्ट्र, धर्म और व्यक्ति के प्रति विद्वेष से छटपटाता' है, फिर भी लोग 'कृत्रिम सुख की छलना' में फँसकर चुप रह जाते हैं।

› चौथा, इसका व्यापक अर्थ बताओ - कि समाज में लोग अन्याय, बुराई देखकर भी आवाज़ नहीं उठाते, क्योंकि वे अपने स्वार्थ या डर के कारण चुप रहना पसंद करते हैं।

उत्तर – चमेली 'आज दिन ऐसा कौन है जो गूँगा नहीं है' कहकर समाज में व्याप्त उस व्यापक गूँगेपन का सवाल उठाती है जहाँ लोग अन्याय, गलत और सामाजिक बुराइयों को देखकर भी अपने मन की बात नहीं कह पाते या उनके खिलाफ आवाज़ नहीं उठाते। वे अपने 'कृत्रिम सुख' और डर के कारण चुप्पी साध लेते हैं, जिससे समाज में संवेदनहीनता बढ़ती है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• रांगेय राघव का मूल नाम और उनके प्रमुख कहानी-संग्रह या उपन्यास के नाम अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में एक या दो अंक के प्रश्न के रूप में पूछे जाते हैं, इन्हें ध्यान से याद करें।

• रांगेय राघव के कथा-साहित्य की विशेषताओं को याद करते समय केवल 'शोषित-पीड़ित मानव जीवन का यथार्थ चित्रण' पर ही ध्यान न दें, बल्कि 'शोषण से मुक्ति का मार्ग' और 'सरल व प्रवाहपूर्ण भाषा' जैसे बिंदुओं को भी स्पष्ट करें। ये तीनों मिलकर ही पूरा उत्तर बनता है।

• इस कहानी के केंद्रीय विचार को हमेशा ध्यान में रखना, क्योंकि बोर्ड परीक्षा में इससे जुड़ा प्रश्न अक्सर 'संदेश' या 'मूल भावना' के रूप में आता है।

• इस कहानी में चमेली की भावनाओं में आए बदलाव को ध्यान से समझें, खासकर जब वह 'दया आती है बेचारे पर' कहती है, और बाद में 'नाली का कीड़ा!' या 'मक्कार!' जैसे शब्द इस्तेमाल करती है – ये उसके बदलते मनोभावों को दर्शाते हैं और अक्सर परीक्षा में पूछे जाते हैं।

• यह अंश बोर्ड परीक्षा में 'सामाजिक न्याय' और 'लेखक के संदेश' पर आधारित प्रश्नों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। चमेली के चिंतन वाले वाक्य ज़रूर याद रखना।

एक नज़र में रिवीज़न

› रांगेय राघव: तिरुमल्लै नंबाकम वीर राघव आचार्य, आगरा में जन्मे, 39 वर्ष की अल्पायु, विविध विधाओं के लेखक।

› रांगेय राघव: कथा-साहित्य शोषित-पीड़ितों का यथार्थ चित्रण, सरल भाषा।

› गूँगे: शोषित मानव असहायता, दिव्यांगों के प्रति समाज संवेदनहीनता.

› चमेली की करुणा से कठोरता तक की यात्रा, गूँगे के व्यवहार के कारण।

› गूँगे की चीत्कार = असहायों की अनसुनी पीड़ा, सामाजिक संवेदनहीनता का विस्तार।